30. बचत एवं विनियोग-I

भविष्य की आवश्यकताओं एवं दीर्घकालीन लक्ष्यों की पूर्ति, आकस्मिक दुर्घटनाओं के समय व आर्थिक संकटों से निपटने के लिये बचत आवश्यक है। भविष्य अनिश्चित होता है। कब क्या हो जाए, इसके बारे में कहना कठिन है। इन परिस्थितियों से निपटने के लिये बचाया धन ही काम आता है। खराब समय में धन ही हमें सम्बल देता है इसलिये हमें अपनी आय में से कुछ भाग भविष्य के लिये बचाकर रखना चाहिये।

अतः भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो भी अपनी आय में से बचाते हैं वह बचत कहलाता है अर्थात् आय एवं व्यय के अन्तर को बचत कहते हैं।

आय- उपभोग व्यय= बचत

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि, उन्नति एवं विकास वहाँ के नागरिकों के बचत पर निर्भर करती है। बचत का मुख्य उद्देश्य परिवार को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना होता है।

परिभाषा – जे.एम. केन्ज के अनुसार– 'वर्तमान आय का वर्तमान (उपभोग) व्यय पर आधिक्य को बचत कहते हैं।' बचत सदैव सोच-समझकर की जानी चाहिये। बचत की योजना बनाते समय ध्यान रखना चाहिये कि वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति पर प्रभाव नहीं पड़े वरना सदस्यों में तनाव व कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है।

बचत एवं संचय में अन्तर– बचत सदैव उत्पादक रूप में रखी जाती है, बचे पैसे को कहीं निवेश करके आय में वृद्धि की जा सकती है।

संचय का अर्थ भी धन को बचाकर रखना है मगर यह अनुत्पादक रूप में रखा जाता है, इससे कोई लाभ नहीं होता है।

बचत की आवश्यकता एवं महत्त्व–

(1) आय में वृद्धि– बचत की गई राशि का उचित विनियोग द्वारा लाभांश या ब्याज कमाया जा सकता है, जिससे आय में वृद्धि होती है। बैंक, पोस्ट ऑफिस, बीमा आदि में बचत का धन जमा करके धन को सुरक्षित रखा जा सकता है व ब्याज का लाभ प्राप्त कर परिवार की आय को बढ़ा सकते हैं।

(2) अनावश्यक खर्चों में कमी– बचत करने से परिवार में अनावश्यक खर्चों पर प्रतिबन्ध लग जाता है। व्यक्ति सोच-समझकर धन व्यय करता है। बचत करने हेतु बजट तैयार करना पड़ता है तथा उसी के अनुसार खर्च करने में अनावश्यक खर्चों में कटौती की जाती है।

(3) आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति– परिवार में किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटनाएँ कभी भी हो सकती हैं जैसे अचानक बीमार पड़ जाना, अपंगता, परिवार के सदस्य की मृत्यु, चोरी, डकैती इत्यादि इससे परिवार विचलित हो जाता और परिवार के सदस्य अपना मानसिक नियंत्रण खो सकते हैं। इस समय बचत की हुई राशि ही काम आती है। आकस्मिकता हेतु कम-से-कम एक महीने का वेतन बचाकर सुरक्षित रखना चाहिए। जो परिवार नियमित रूप से बचत करते हैं वे भविष्य की आकस्मिक आवश्यकताओं के प्रति निश्चिंत रहते हैं व विपरीत स्थिति का सफलतापूर्वक सामना करने में समर्थ होते हैं।

(4) मानसिक सन्तुष्टि– बचत करने से परिवार मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहता है, उसे भविष्य की चिंता नहीं होती है उससे आत्मबल व साहस में वृद्धि होती है। अगर बचत नहीं हो तो आकस्मिक दुर्घटनाओं के समय व्यक्ति घबरा जाता है व भयभीत रहता है।

(5) वृद्धावस्था में आर्थिक संरक्षण– समय चक्र के साथ व्यक्ति बालक से वृद्ध बनता है। वृद्धावस्था में व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिवार के सदस्यों पर आश्रित रहना पड़ता है। परिवार वाले भी तभी सेवा करते हैं जब उन्हें पता चलता है कि वृद्ध व्यक्ति के पास धन है अतः बचत करने से वृद्धावस्था का समय आराम से व्यतीत हो सकता है।

(6) धनोपार्जन करने वाले व्यक्ति की मृत्यु– भविष्य अनिश्चित होता है, कब किसकी मृत्यु हो जाए यह भी निश्चित नहीं होता है। परिवार में अचानक कमाने वाले व्यक्ति की मृत्यु होने पर पूरे परिवार को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है, मानसिक पीड़ा होती है, लेकिन यदि भविष्य के लिए बचत करके रखी गई हो तो इस संकट की घड़ी का सामना सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

(7) दीर्घकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति– हर परिवार के कुछ दीर्घकालीन लक्ष्य होते हैं जैसे-बच्चों की शिक्षा, विवाह, मकान इत्यादि।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काफी धन की आवश्यकता होती है, जो कि बचत करके ही संभव हो सकता है।

(8) रहन-सहन के स्तर में वृद्धि- बचत करने से आय में वृद्धि व अनावश्यक खर्चों में कमी होती है तथा व्यक्ति के पास एकमुश्त अधिक धन इकट्ठा रहता है, जिससे वह जमीन, जायदाद, मकान, कार, बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान कर सकता है। जिससे परिवार के रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठता है। बचत के द्वारा परिवार का जीवन सुखद, आनन्दमयी व संतोषप्रद बनाया जा सकता है।

(9) सामाजिक प्रतिष्ठा- बचत से रहन-सहन का स्तर उच्च होता है, इससे व्यक्ति को समाज में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा मिलती है। बचत का कुछ भाग सामाजिक कार्यों में दान देकर भी समाज में आदर पाया जा सकता है।

(10) स्थायी सम्पत्ति की खरीद- मकान, दुकान, जमीन आदि स्थायी सम्पत्ति खरीदने के लिए अधिक धन की आवश्यकता होती है। इसके लिए प्रारम्भ से ही थोड़ा-थोड़ा पैसा बचाकर रखना पड़ता है, जिससे स्थायी सम्पत्ति खरीदी जा सके। इससे अचल सम्पत्ति व आय में वृद्धि होती है।

(11) सेवानिवृत्ति होने पर आर्थिक सुरक्षा- सेवानिवृत्ति के बाद परिवार की आय आधी रह जाती है। कई बार आय बन्द भी हो जाती है तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वास्थ्य भी खराब रहने लगता है। स्वास्थ्य अच्छा रहे इसके लिए दवाई, फल, भोजन पर अधिक व्यय होने लगता है। इसलिए व्यक्ति को वृद्धावस्था के लिए धन बचाकर रखना चाहिए।

(12) राष्ट्रीय योजनाओं के संचालन में मदद- व्यक्ति अपना बचाया पैसा विभिन्न योजनाओं में निवेश करके लाभांश प्राप्त करता है। उस पैसे से सरकार विभिन्न राष्ट्रीय योजनाएँ संचालित करती है, जिससे राष्ट्र का विकास हो सके।

विनियोग

सामान्य अर्थों में विनियोग का अर्थ 'उन वस्तुओं' को क्रय करना, जिससे व्यक्ति को लाभ हो।' या 'व्यापार में पूँजी लगाना' ही विनियोग कहलाता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय में से कुछ-न-कुछ धनराशि अवश्य बचाता है जिसे या तो वह अपने घर में तिजोरी में रखता है या किसी भी आर्थिक संस्था जैसे डाकघर, बैंक, जीवन बीमा इत्यादि में निवेश करता है उससे ब्याज प्राप्त कर आय में वृद्धि कर सकता है। तिजोरी में रखे पैसे चोरी भी हो सकते हैं व उस पर ब्याज भी नहीं मिलता है, परन्तु प्रतिष्ठित कम्पनी में पैसे निवेश करने से पैसा सुरक्षित तो रहता ही है, साथ में आय में भी वृद्धि होती है। अत: लाभ हेतु धन को उचित स्थान पर लगाना ही विनियोग कहलाता है।

विनियोग-बचत+ब्याज

वर्तमान में पैसा विनियोग के बहुत साधन उपलब्ध हैं, परन्तु धन को सरकारी संस्थाओं में लगाने से धन सुरक्षित रहता है। हमेशा उन्हीं संस्थाओं में पैसा निवेश करना चाहिये जहाँ ब्याज दर अच्छी हो, पैसा सुरक्षित रहे तथा जिसमें अधिक तरलता हो।

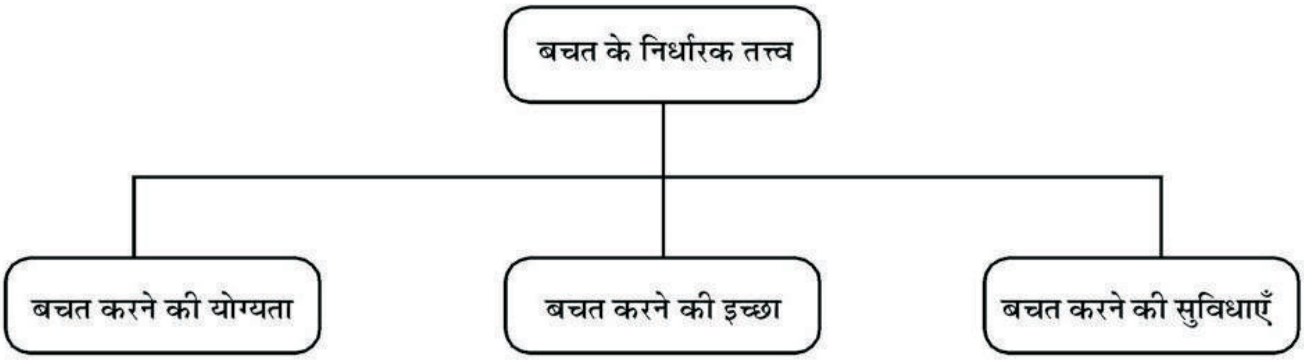

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. वर्तमान की परिस्थितियों में जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए तथा परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा के लिए बचत आवश्यक है।
2. कुल आय में से उपभोग व्यय करने के बाद जो कुछ बचता है वह बचत कहलाती है।
3. बचत परिवार की आय, सदस्यों की संख्या, रहन-सहन का स्तर, निवेश के साधन इत्यादि पर निर्भर करती है।
4. बचत को सही जगह विनियोग करने से पैसा सुरक्षित तथा मूलधन में वृद्धि होती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर चुनें :

(i) आय का वह भाग जो भविष्य के लिए बचाकर रखा जाता है .... कहलाता है।

(अ) धन (ब) व्यय

(स) बचत (द) विनियोग

(ii) बचत की आवश्यकता क्यों है?

(अ) घूमने के लिए (ब) वृद्धावस्था के लिए

(स) कपड़े खरीदने के लिए (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(iii) धन को लाभ हेतु उचित स्थान पर लगाना ही ...... कहलाता है।

(अ) बचत (ब) ऋण

(स) विनियोग (द) व्यय

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) कुल आय में से व्यय को घटा देने पर जो शेष बचता है .... कहलाता है।

(ii) वह बचत जिस पर व्यक्ति को ब्याज मिलता है .... कहलाता है।

(iii) बचत से समाज में व्यक्ति की .... बढ़ती है।

(iv) बचत से सेवानिवृत्ति के समय .... संरक्षण प्राप्त होता है।

(v) धनराशि का अनुत्पादक रूप .... कहलाता है।

3. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये-

(1) विनियोग

(2) बचत

(3) बचत से आय में वृद्धि

(4) संचय

(4) बचत की आवश्यकता को विस्तार से समझाइये।

(5) विनियोग से क्या-क्या लाभ होते हैं?

(6) बचत की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को समझाइये?

उत्तरमाला :

(i) स (ii) ब (iii) स

2. (i) बचत (ii) विनियोग (iii) प्रतिष्ठा (iv) आर्थिक(v) संचय